

पृथ्वी पर शांति

अन्य विधाओं की तरह धर्म का भी अपना एक विशेष क्षेत्र और एक विशेष कार्य है। यदि हम उस विशेष कार्य को भूल कर धर्म के नाम पर अन्य कार्य करने लगेंगे तो हम धर्म का नाश कर देंगे। दुर्भाग्य की बात यह है कि बहुत से स्थानों पर ऐसा ही हो रहा है।

धर्म के मुख्य कार्य के प्रति सजग रहते हुए, यदि हम धार्मिक लक्ष्य के प्रति गम्भीर हैं, तो यह हमारे लिए अनिवार्य है कि हम अपने आप को अपने सत्यस्वरूप में स्थापित कर लें। जितने स्थिर हम अपने सत्यस्वरूप में होंगे उतनी ही शांति इस धरा पर स्थापित होगी। ऐसा करने पर हम पाएंगे कि हमने अपनी, अपने सहमानवों और विश्व की समस्याओं का समाधान भी पा लिया है।

सो अपने प्रति और आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम अपने आप को अपने सत्यस्वरूप में चिरस्थापित करने का एक अथक प्रयास करें।